



8

फरवरी-I-2019

ओमशान्ति मीडिया



**राधागडा-ओडिशा।** आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. श्रीमती। मंचासीन हैं अश्विनी जैन, प्रिन्सीपल, सेंट जेवियर्स हाई स्कूल, ए.केशव राव, रिटा. हाई स्कूल टीचर, प्रशांत पटनाइक, रिटा. टीचर एवं प्रसिद्ध कवि व गायक, रजनीकांत सामंतरे, ब्लॉक एजुकेशन ऑफिसर, कृष्णा चन्द्र महल, सी.आई., स्कूल्स, एस.सी. एंड एस.टी. डेवलपमेंट डिपार्टमेंट, सलवा राजू, रिटा. प्रिन्सीपल, ऑटो नोमस कॉलेज तथा दुसमंता मोहंती, रिटा.रीडर, वुमेन्स कॉलेज।



**गुमला-तपकरा(झारखण्ड)।** डी.डी.सी. अजय शर्मा को ईश्वरीय साहित्य एवं प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. ममता।



**भुवनेश्वर-मंचेश्वर(ओडिशा)।** आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् किड्जी स्कूल के प्रिन्सीपल प्रताप चन्द्र पटनाइक को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मंजू तथा ब्र.कु. सुजाता।



**चैल चौक-मण्डी(हि.प्र.)।** आध्यात्मिक प्रदर्शनी कार्यक्रम में विधायक विनोद जी को ईश्वरीय सौगात भेंट कर ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. प्रियंका व ब्र.कु. दया।



**श्रीकरणपुर-राज.।** 91वां वाहिनी में कार्यक्रम के दौरान ब्र.कु. वंदना को मोमेंटो द्वारा सम्मानित करने के पश्चात् चित्र में कमाण्डर इन चीफ देवेन्द्र सिंह तथा अन्य।



**नीम का थाना-राज.।** 'तनाव मुक्त योग शिविर' के दौरान उपस्थित हैं आदर्श रामलीला मण्डल के डायरेक्टर अशोक कश्मीरी, ब्र.कु. स्नेहा, बाबू सिंह, रामसिंह भाई तथा ब्र.कु. राजकुमारी।



**शांतिवन।** भारत के नोबल संस्थान द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी को 'लाइफ टाइम अचीवमेंट-नोबल अवॉर्ड-2018' से सम्मानित किया गया। अवॉर्ड ग्रहण करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी।

## सभी मान की इच्छा से कार्य करते

- गतांक से आगे...

एक छोटा बच्चा भी आज की दुनिया के अन्दर अभिमान की वृत्ति को रखता है। आज एक छोटा बच्चा घर में है और मान लो कि उसका पिता शाम को घर में आता है तो उस वक्त उसकी माँ उसको कहती है बेटा, जा एक गिलास पानी लेकर आओ पिता जी के लिए। वो दौड़कर के जाता है और एक गिलास पानी भरकर ले आता है। और जब वो अपने पिता को पानी देता है और मान लो कि उसी वक्त पिता ने उसको कह दिया शाबाश बेटे! थैंक्यू। बस इतना कहा तो उस बच्चे का अभिमान भी संतुष्ट हो जाता है। दूसरे दिन शाम को उसका पिता आता है तो माँ को कहना नहीं पड़ता है, वो तुरंत भागता है और उस मान की इच्छा को लेकर कि आज भी मुझे थैंक्यू मिलेगा, पानी का गिलास लेकर पहुंच जाता है। लेकिन मान लो कि पिता अपनी टेंशन में है और उसने बेटे को थैंक्यू नहीं कहा, शाबाश बेटा नहीं कहा। दूसरे दिन जब वो पिता शाम को आता है और माँ उस बच्चे को कहती है बेटा पानी लेकर आओ, तो बेटा क्या कहेगा? मैं बिजी हूँ, आप ही लेकर जाओ। दूसरे दिन वो पानी का गिलास लेने को दौड़ेगा नहीं, क्योंकि उसके मान की पूर्ति नहीं हुई। बच्चा समझने लगता है कि जैसे कोई हमें चॉकलेट देता है और हमसे तो बार-बार बोलवाते हैं, थैंक्यू करो बेटा, थैंक्यू करो बेटा और थैंक्यू बोल देता है। लेकिन जब वो बेटा थैंक्यू सुनने की भावना से पानी का गिलास

लेकर गया और उसको किसी ने थैंक्यू बेटा नहीं कहा तो दूसरे दिन उसको चॉकलेट देकर के दस बार कहो कि थैंक्यू कहो बेटा, तो बिल्कुल नहीं बोलेंगे। क्योंकि उसने जब कोई कर्म किया आपकी सेवा में, तो आपने तो उसे थैंक्यू कहा ही नहीं। तो उसे यह महसूस होता है। कितनी उसकी कैचिंग पॉवर है कि जब मैंने दिया तो थैंक्यू नहीं मिला और जब मुझे दे रहे हैं तो हर बार मुझे थैंक्यू बोलने को क्यों कहते हैं? दस बार माँ के बोलने पर भी वो बच्चा नहीं बोलता है। तो क्या कहती है माँ? आजकल ये जिद्दी हो गया है। नहीं तो इतना अच्छा थैंक्यू बोलता है,



- ब्र.कु. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

लेकिन आज नहीं बोला। इसी तरह से जब वो कोई भी कार्य करता है तो उसको थैंक्यू कह दो, तो देखो वो दूसरे दिन फटाफट, उसको चाहे आये या न आये करेगा और वह आपको मदद करने के लिए पहुंच जायेगा। भावार्थ ये है कि अहंकार बहुत बुरा है, उससे कम अभिमान है। अभी-अभी मान चाहिए, मिल गया तो खुश, नहीं मिला तो बड़ा दुःखी हो जाता है इंसान, कि मैंने इतना किया फिर भी मुझे मान नहीं मिला। कई बार देखा जाता है कि घर के अंदर ही एक व्यक्ति ये चाहना रखता है कि अभी-अभी मेरी बात माने, उसका ये अभिमान है। जबकि सामने वाला दूसरा व्यक्ति समझता है कि अभी-अभी मान मिले तो मैं बात मानूँ। अगर मान ही नहीं मिलता है तो मानेंगे कैसे? - क्रमशः



**नरकटियागंज-विहार।** फुटबॉल मैच का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. अबिता, ब्र.कु. रेनु, अर्पणा सिंह तथा अन्य।

## यह जीवन है...

जब हम किसी के लिए कुछ करते हैं या हम किसी की मदद करते हैं, तो उसकी मदद खुशी से करें ना कि मजबूरी से। और आप जिनकी मदद करते हैं उनसे कभी मदद की अपेक्षा ना रखें। हमने किसी को सहयोग किया था, ना कि एहसान किया था। किसी को सौगात देना और किसी को कर्ज देना, दोनों में बहुत फर्क है। सहयोग या मदद करते समय यह याद रहे कि आप उन्हें कर्ज नहीं दे रहे हैं जो वह चुका करेंगे। जब आप किसी की मदद करते हैं, तो उनको प्यार से मदद करके भूल जाएं।

## ख्यालों के आईने में...

गलती नीम की नहीं कि वो कड़वा है, खुदगर्जी जीभ की है। जिसे मीठा पंसद है। पता नहीं कैसे परखता है मेरा ईश्वर मुझे, इम्तिहान भी मुश्किल लेता है और फेल भी नहीं होने देता।।

विकल्प बहुत मिलेंगे मार्ग भटकाने के लिए, लेकिन, संकल्प एक ही काफी है, लक्ष्य तक जाने के लिए।

